Study Material For B.A Part-I

Dr Tapati Mukerjee.
Date-27.05.2020
Associate Professor
Ranchi Mahila College

Paper 1st Theory.

Topic – निबद्ध गान, अनिबद्ध गान, रागालाप.

(1) निबद्धगान – जो गायन मे ताल बद्ध हो अर्थात ताल मे बंधी हुई बंदीश या रचनाओं को निबद्धगान कहा जाता है। प्राचीन काल मे निबद्ध गायन के अन्तर्गत प्रबन्ध, वस्तु, रुपक आदि गायनों के प्रकार प्रचलित थे।

परन्तु आधुनिक युग में निबद्ध गायन के अन्तर्गत ख्याल, ठुमरी, दादरा ध्रुपद आदि आते हैं। इन सब गीतों को ताल वाद्य के साथ अर्थात ताल मे बांधकर गाया जाता है। इसलिए यह सब गायन शैली निबद्ध गायन के अन्तर्गत आते है,

(2) अनिबद्धगान: जो गायन शैली बिना ताल के गाया बजाया जाता है उसे अनिबद्ध गान कहा जाता है, अर्थात ताल रहित रचनाएँ अनिबद्ध गायन के अन्तर्गत आते हैं। प्राचीन काल मे अनिबद्ध गान के प्रकार रागालाप, रुपकालाप, आलाप्तिगान आदि प्रचलित था, लेकिन आधुनिक काल मे अनिबद्ध गान के अन्तर्गत आलाप गायन प्रचलित है, जो राग गायन के पूर्व या पहले राग रुप प्रकट करने के लिए गाया बजाया जाता है।

Scanned with CamScanner

(3) रागालाप

प्राचीनकाल मे आलाप करने का यही प्रकार प्रचलित था राग गायन या बंदीश गायन के पूर्व राग मे प्रयोक्त होने वाले स्वर समुह को लोकर विभाजित रुप से बिना तालका गाया जाता था। इसे अनिबद्ध गायन के रुप मे जाना जाता था।

आधुनिक युग मे गायक या वादक गायन के पूर्व मे आलाप करते हैं। रागालाप के माध्यम से रागों का दश (10) लक्षण को दिखाया जाता है जो इस प्रकार है —

(1) ग्रह, (2) अंश, (3) न्यास, (4) अल्पत्व - (5) बहुत्व (6) षड्वत्व, (7) औडवत्व (8) अपन्यास (9) मन्द्र तथा तार।